REVIEW OF RESEARCH

ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्यय

डॉ. सुनीता भार्गव[1] , सुमन लता यादव[2]

[1]प्राचार्य, संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, लाल कोठी, जयपुर.
[2]शोधकर्त्री, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

सार –

प्रस्तुत शोध में ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया। शोध में न्यादर्श के रूप में 300 अध्यापकों को सम्मिलित किया। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग कर प्रदत्तों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण SPSS सॉफ्टवेयर द्वारा किया गया। शोध के निष्कर्ष में पाया गया ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

प्रस्तावना–

शिक्षक विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की प्रमुख गत्यात्मक शक्ति है। शिक्षक का सीधा सम्बन्ध छात्रों से होता है। वह बालकों का सर्वांगीण विकास करने में सहायक तथा प्रगति की राह दिखाने वाला एक पथ प्रदर्शक होता है। शिक्षक केवल कक्षा में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विद्यालय में उचित वातावरण का निर्माण करता है। शिक्षक के शिक्षण कार्य का दर्पण विधार्थी होता है। किसी भी शिक्षक की प्रभावशीलता की जांच व मूल्यांकन कक्षा, कक्ष में होता है अर्थात किसी भी शिक्षक के विद्यार्थियों का विकास एवं उनकी उपलब्धियां शिक्षण प्रभावशीलता की मानक होती हैं। शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता में वृद्धि एंव उनके वांछित परिणामों पर निर्भर करती है, साथ ही शिक्षक की प्रभावशीलता शिक्षक में निहित शिक्षण कौशलों, व्यवसायिक प्रतिबद्धताओं एवं विद्यार्थियों की विशेषताओं का भी परिणाम होती है। शिक्षक का ज्ञान उसकी योग्यताएं, उसके कौशल तथा शिक्षण स्थितियां आदि क्षमताएं सकारात्मक भाव में हो तो निसंदेह शिक्षक की प्रभावशीलता उच्च स्तर की होगी।

शिक्षक का प्रभाव समाज को नवीन दिशा देने में महत्वपूर्ण है। कोठारी कमीशन (1964–66) के प्रतिवेदन में लिखा गया है कि राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। देश के भविष्य का निर्माण कक्षाओं में होता है। निःसंदेह जैसा शिक्षक होगा, वैसे ही उसके छात्र होगें उसी प्रकार का समाज बनेगा तथा उसके अनुरूप राष्ट्र का भविष्य बनेगा। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक योग्य हो साथ ही उसका शिक्षण प्रभावशाली हो जिससे कि उत्तम नागरिकों का निर्माण हो सके।

अध्ययन की आवश्यकता इसलिये महसूस हुई क्योंकि अच्छे राष्ट्र निर्माण के लिए गुणवत्ता युक्त शिक्षा दी जाये परन्तु गुणवत्ता युक्त शिक्षा के लिये गुणवत्ता युक्त अध्यापकों का होना अनवार्य है। लेकिन वर्तमान में अधिकांश शिक्षकों में गुणवत्ता का स्तर दिन प्रतिदिन घटता जा रहा है जिससे उनकी प्रभावशीलता प्रभावित हो रही है। प्रभावशाली शिक्षण की समस्या महिला–पुरूष, शहरी–ग्रामीण सभी में समान रूप से विद्यमान है। ऐसा नहीं है कि प्रभावशाली शिक्षकों की नितान्त कमी है परन्तु समग्र रूप से योग्य एवं दक्ष शिक्षकों का अनुपात कम है। शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में गिरावट उसके मापन एवं कारणों को जानने हेतु शोधकर्त्री अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता के अध्ययन की ओर आकर्षित हुई। अतः अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन हर समय आवश्यकता आधारित व

सार्थक ही होगा क्योंकि प्रभावी शिक्षण ही राष्ट्र के सभी आयामों व मांगों के विकास की कुंजी है।

एन. के. जंगीरा ने अपनी पुस्तक ''प्रभावशाली शिक्षण में बताया कि शिक्षण प्रभावशीलता अध्यापक के व्यतित्व व अन्य घटकों के साथ साथ प्रभावी शिक्षण पर निर्भर करती है। वस्तुतः यह एक बाल केन्द्र अवधारणा है अर्थात शिक्षक की प्रभावशीलता की मापक उसकी कक्षा अन्तःक्रिया एवं बालकों की उपलब्धियां होती है।

शोध के उद्देश्य –

ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

सीमांकन –

1 प्रस्तुत शोध राजस्थान के जयपुर जिले तक सीमित किया गया है।
2 प्रस्तुत शोध कार्य को माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों तक सीमित किया गया है।

न्यादर्श – अध्ययन में जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत कुल 300 अध्यापकों को सम्मिलित किया गया है जिसमें 150 ग्रामीण एवं 150 शहरी अध्यापकों को चयनित किया गया है।

प्रयुक्त शोध विधि – अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत आने वाली सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण – आंकडों को एकत्रित करने हेतु डॉ. प्रमोद कुमार एवं डी. एन. मुथा द्वारा निर्मित ''शिक्षण प्रभावशीलता मापनी'' का प्रयोग किया गया है। इस मापनी में कुल 69 प्रश्न हैं।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियॉ – प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण – प्रदत्तों का संगणन एंव विश्लेषण SPSS सॉफ्टवेयर द्वारा किया गया है। जिसमें प्राप्त परिणामों को सारणी व ग्राफ के द्वारा निम्नानुसार प्रदर्शित किया गया।

परिकल्पना – माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

	परिवेश	N	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
शिक्षण प्रभावशीलता	ग्रामीण	150	301.01	28.362	2.001
	शहरी	150	306.80	21.285	

LBP PUBLICATION

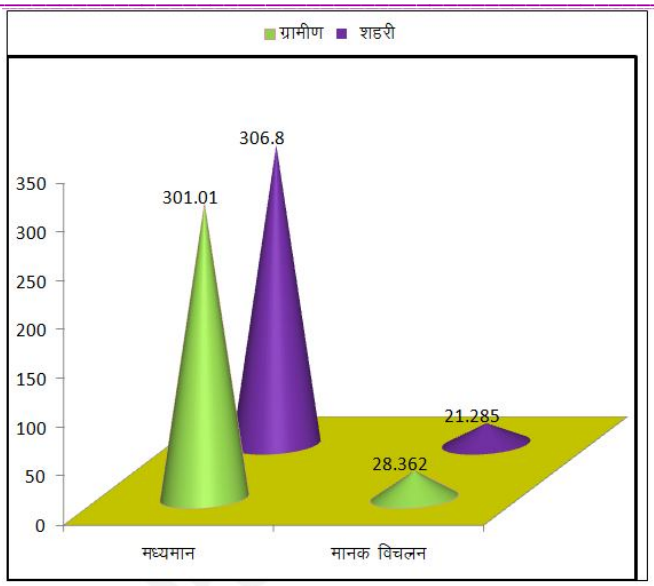

विश्लेषण एवं व्याख्या –

सारणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के अध्यापकों के दो समूह हैं। ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों की संख्या 150–150 है। उक्त सारणी में माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता को देखा गया है, जिसमें ग्रामीण अध्यापकों का मध्यमान 301.01 तथा मानक विचलन 28.362 है। शहरी अध्यापकों का मध्यमान 306.80 तथा मानक विचलन 21.285 है। टी का मान 2.001 है जो कि 0.01 स्तर पर 2.59 से कम तथा 0.05 स्तर पर 1.96 से अधिक है। अतः 0.01 स्तर पर परिकल्पना स्वीकृत तथा 0.05 स्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है। इस प्रकार माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

निष्कर्ष –

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों में शिक्षण प्रभावशीलता के आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है। शोध में शहरी परिवेश के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता अधिक पाई गई इसका प्रमुख कारण शहरी परिवेश में अध्यापक नवाचारों से अवगत अति शीघ्र होते हैं साथ ही तकनीकी प्रगति शहरों में तीव्र गति से होने के कारण एवं शहरी विद्यालयों में सुविधाएँ ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक होने के कारण शहरी अध्यापकों में शिक्षण प्रभावशीलता उच्च पाई जाती है।

संदर्भ सूची –

- दास, आर. सी. (1995). शिक्षण प्रभावशीलता. नई दिल्ली : नेशनल पब्लिकेशन हाउस. पृ.सं. 03
- जंगीरा, एन. के. (1995). प्रभावशाली शिक्षण बाल केन्द्रित अवधारणा. नई दिल्ली : नेशनल पब्लिकेशन हाउस. पृ. सं. 07
- कपिल, एच. के.(2007). सांख्यिकी के मूल तत्व. आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर.
- कोठारी शिक्षा आयोग, डॉ. सिंह मया शंकर अध्यापक शिक्षा गुणवत्ता विकास पृष्ठ संख्या 80
- रायजादा, बी. एस. एवं शर्मा वंदना (2011). शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्त्व. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.

डॉ. सुनीता भार्गव
प्राचार्य, संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, लाल कोठी, जयपुर.

सुमन लता यादव
शोधकर्त्री , राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.

LBP PUBLICATION